N R Godsey

swasasan@gmail.com

सोम. 22-05-2017 08:28

इनबॉक्स

प्रति:swasasan@live.com <swasasan@live.com>;

नाथूराम गोडसे जी के अभिभाषण
"मैंने गाँधी को क्यों मारा"
पढ़ा /सुना
जिसमें उन्होंने अपने बचाव में भावुक दलीलें दीं , जज सहित सभी श्रोता मानव ही थे, भावुक विचार सुन
भावनाओं में बह सकते
थे ! बहे !
किन्तु सम्पूर्ण व्याख्यान सुनने के बाद भी मेरी तार्किक दृष्टि में, गाँधी गोडसे से बड़े हिन्दूवादी, राष्ट्र वादी और समाज वादी भी थे!
समस्या सिर्फ इतनी सी थी कि गाँधी जो कर रहे थे वह गोपनीयता के साथ, दीर्घ कालीन, गूढ़, दृढ़ व स्थायी था!
गोडसे और उनके सहयोगी , उनका दल अक्षम , अधीर और असहिष्णु थे!
आज भी,
गोडसे के समर्थक
बातचीत कर रास्ते
बनाने की जगह
जुबान/ गर्दन
काट कर रास्ता साफ करने में विश्वास रखते
हैं! बात करेंगे भी तो केवल अपना पक्ष रख
मानने
या
मरने को तैयार रहने
के दो विकल्पों में से एक चुनने की ही आजादी देते हैं!

*यही रावण से लेकर बगदादी तक का रास्ता
है!*

राम / कृष्ण
के नाम का
जयकारा लगाकर
रावण / कंस के
पदचिह्नों पर
चलने वाले ही
आज
जिस जनता के
आदर्श पुरुष हैं!
वो क्या समझ सकेगी कि
गाँधीजी
किसके हितैषी थे !!!

*अहिंसक हिन्दुओं के या
निरंतर निरीहों को
हलाल
करने वालों के!*

(गाँधी जी ने साम्प्रदायिक दंगे रुकवाने आमरण अनशन किये !
किसके हित में???
उनके हित में
जिनकी
धार्मिक परम्परा के
निर्वहन को
हर घर में
गरदन काट
हलाल करने के
संसाधन
और
प्रशिक्षण रहता था
या
उनके
जिनके घरों 🏠 में
घुस आये साँप को
मारने /भगाने
दसों घर तलाश कर
लाठी लाई जाती थी?)
निर्णय ?
स्वयं ही कीजिये!

#सत्यार्चन

Sent from my Windows 10 phone